RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 45 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 28 जनवरी , 2018
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
25 JAN 2018
JALANDHAR CITY R.M.S.

वर्ष–74, अंक : 45, 25-28 जनवरी 2018 तदनुसार 15 माघ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

उठो, ऐश्वर्य का भाग देखो

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदि श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन।।

-अथर्व० ७।७२।१

शब्दार्थ-उत्तिष्ठत = उठो और **इन्द्रस्य** = ऐश्वर्य के **ऋत्वियम्** = व्यवस्थित **भागम्** = भाग को **अवपश्यत** = देखो **यदि** = यदि वह **श्रातम्** = पक चुका है, तो **जुहोतन** = होम दो और **यदि** = यदि **अश्रातम्** = नहीं पका है, तो भी **ममत्तन** = मस्त होवो।

व्याख्या-वेद में समाज की जो कल्पना है, वह अत्यन्त उदात्त है। वेद आदेश करता है कि समाज समृद्ध, पुष्ट, धन-धान्य से भरपूर होना चाहिए। इसीलिए वेद कहता है-**'उत्तिष्ठत'** = तुम सब उठो। यहाँ 'उत्तिष्ठ' [तू उठ] नहीं कहा। वरन् **'उत्तिष्ठत'** [तुम सब उठो] कहा है। समाज में कोई एकाध उन्नत हो, शेष हों अवनत परिस्थिति में, तो समाज अवनत और अशान्त ही रहेगा, अत: 'तुम सब उठो' आदेश हुआ है। उठकर क्या करें-**'अवपश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्** = ऐश्वर्य के व्यवस्थित भाग को देखो। उपनिषत् ने इस पूर्वार्ध का सुन्दर शब्दों में अनुवाद किया है-**'उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत'**-[कठो० १।३।१४] उठो, जागो और श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करके होश में आओ। उपनिषत् ने कहा-**'प्राप्य वरान्निबोधत'** [श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करके होश में आओ] वेद कहता है-**'अवपश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्'** [ऐश्वर्य के व्यवस्थित भाग को देखो]। 'वर-पदार्थ' और 'ऐश्वर्य के व्यवस्थित भाग' में कोई अन्तर नहीं है। 'अवपश्यत' का अर्थ है-'गहरी दृष्टि से देखो।' 'निबोधत' का अर्थ है-'समझो, होश में आओ।' दोनों के भाव में समानता है।

'उपनिषत्' का 'वर' = श्रेष्ठ पदार्थ बहुत सुन्दर है, किन्तु वेद का 'ऋत्वियं भागम्' = व्यवस्थित भाग बहुत महत्त्व का है। सृष्टि के पदार्थों में सबका भाग है-किसी का थोड़ा, किसी का अधिक। यह थोड़ा या अधिक अन्धाधुन्ध विभाजन पर अवलम्बित नहीं, वरन्, जिसने जैसी कमाई की है, उसके अनुसार व्यवस्थित है। वेद ने इस व्यवस्थित भाग की बात कहकर इसके प्राप्त करने के उपाय का भी निर्देश किया है, अर्थात् जैसे कर्म करोगे, सृष्टि के पदार्थों में भला या बुरा, अधिक या अल्प वैसा ही तुम्हारा भाग रहेगा। उसमें घटाबढ़ी करने का अधिकार किसी को नहीं है।

वेद ने, उत्तरार्ध में ऐसी बात कही है जिस पर बलिहार होने को जी चाहता है-**'यदि श्रातं जुहोतन'** = यदि पका है तो होम कर दो, अर्थात् ऐश्वर्य की पराकाष्ठा पर पहुँचकर उसे होम-**'इदन्न मम'** [यह मेरा नहीं] कहकर भगवान् की राह में दे डालो। धन के त्याग में सुख है, संग्रह में दु:ख है। और **'यद्यश्रातं ममत्तन'** यदि कच्चा हो तो मस्त हो जाओ। कच्चे पर दु:ख मानने का अधिकार नहीं है। पक्के को रखने का अधिकार नहीं, कच्चे पर शोक करने का नहीं। इसे कहते हैं-हानि-लाभ में समता। वेद ऐश्वर्य दिलाकर भी शान्त रखना चाहता है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्ष 2018 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2018 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। इस वर्ष कैलेण्डर का मूल्य पाँच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

अहं भुवं वसुन: पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वत:।
मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे विभजामि भोजनम्।।

-ऋ० १०.४८.१

भावार्थ-परमदयालु परमात्मा, मनुष्यों को वेद द्वारा उपदेश देते हैं-हे मेरे पुत्रो! मैं सब धनों का स्वामी हूं मेरे अधीन ही सब पदार्थ हैं। जैसे बालक अपने पिता से माँगते हैं, वैसे ही सब मनुष्य मुझसे माँगते हैं, सबका दाता मैं ही हूँ। परन्तु दानशील मनुष्य को मैं विशेषरूप से धनादि पदार्थ देता हूँ, क्योंकि वह दाता सदा उत्तम कर्मों में ही धन को खर्च करता है।

प्रभु प्रेरणा से हम परमेष्ठी बनें

ले.-श्री अशोक आर्य जी कौशाम्बी

यजुर्वेद का आरम्भ यह उपदेश देते हुए होता है कि जो व्यक्ति प्रभु की दी गयी प्रेरणा पर चलता है वह परमेष्ठी बनता है अर्थात् वह प्रभु के आदेश का पालन करने वाला, उस प्रभु के मार्ग-दर्शन में रहने वाला होता है। मंत्र का मूल पाठ इस प्रकार है :

ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशंसो ध्रुवाऽऽ-अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। यजुर्वेद 1.1।।

इस मंत्र में जीव ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहा है कि हे प्रभु! मुझे प्रेरणा दो। अपने भक्त की इच्छा पूर्ण करने के लिए प्रभु उसे उपदेश देते हुए, इस प्रकार की प्रेरणा देते हुए कहता है कि हे जीव! यदि तू परमेष्ठी बनना चाहता है तो तू इन प्रेरणाओं को अपने जीवन का अंग बना ले, इन्हें अपना ले। इन्हें अपनाने पर ही तू इस उत्तम पद को पा सकेगा। यह प्रेरणाएं इस प्रकार हैं-

१. तू गतिशील हो: प्रभु वायवःस्थ शब्द के माध्यम से जीव को प्रथम प्रेरणा देते हुए कहता है कि अकर्मण्यता से कोई भी प्राणी कभी ऊपर नहीं उठ सकता। ऊपर उठने के लिए सक्रिय होना आवश्यक है, पुरुषार्थी होना आवश्यक है, मेहनती होना आवश्यक है। इसलिए हे जीव! तू सदा गतिशील रहा, क्रियाशील रहा, पुरुषार्थ में लगा रहा। यह पुरुषार्थ ही तेरे काम आवेगा। अकर्मण्यता को तू अपने पास भी न आने दे। तू आत्मा है। आत्मा का अर्थ है सतत, निरन्तर गतिशील होना। जब जीव आत्मा के इस अर्थ को भूल कर अकर्मण्यता को अपना लेता है तो यह अकर्मण्यता उसे जीर्ण-शीर्ण कर देती है, उस का नाश कर देती है। इस के उलट यदि जीव पुरुषार्थी है, गतिशील है, क्रियाशील है तो इससे उस में विकास का उदय होता है, यह विकास का कारण बनती है। इससे स्पष्ट होता है कि जीव के लिए जिसे जीवन माना गया है, वह है क्रियाशीलता। क्रियाशीलता ही उसके लिए जीवन है।

२. सुप्रेरक बनने की विद्वान लोग चेष्टा करें:

प्रभु सविता देवः वःश्रेष्ठतमाय कर्मणा प्रापयतु के माध्यम से उपदेश करते हैं कि हे जीव! बस तुम अपने अंदर ऐसी अनुकूलता पैदा करो कि विद्वान लोग, ज्ञानी पुरुष, जो सदा प्रेरणा देने वाले प्रेरक होते है, वह लोग तुम्हें सदा श्रेष्ठ ही नहीं अपितु श्रेष्ठतम कर्मों की ओर प्रेरित करें क्योंकि इन कर्मों से ही तू ऊंचा उठेगा।

३. तुम प्रतिदिन बढ़ो :

प्रभु मंत्र में आए शब्द आप्यायध्वम् के द्वारा पुनः प्रेरणा देते हुए उपदेश करते हैं कि हे जीव! तुम प्रतिदिन बढ़ो। तुम प्रतिदिन ऊपर उठो, उन्नति करो। यह सबका पुरुषार्थ होगा। इस सब के लिए एक मात्र मार्ग यह है कि हम निरंतर पुरुषार्थ करें, क्रियाशील रहें, उन्नति के पथ को न छोड़े। हम ने यह जो अपने को सक्रिय बनाया है, यह हमारी क्रियाशीलता हमें उत्तम कर्मों की ओर झुकाने वाली हो।

४. अहिंसकों में उत्तम बनो :

प्रभु अघन्या शब्द से उपदेश करते हैं कि हे जीव! तू कभी हिंसक न बनना तथा कभी किसी की हिंसा न करने वालों में तुम उत्तम होना। स्पष्ट है कि प्रभु अहिंसक को उत्तम मानते है इस कारण वह माँसाहार के भी विरुद्ध है तथा किसी को भी माँसाहार की स्वीकृति नहीं देते। इस के साथ ही प्रभु का उपदेश है कि मानव का जो भी कार्य हो वह निर्माण के लिए, विकास के लिए, जन कल्याण के लिए हो, दूसरों के हित-अहित का ध्यान रखते हुए किया जावे तथा जन कल्याण के लिए हो। इस सब के साथ ही यह बात भी स्पष्ट की गयी है कि तुम्हारा कोई भी काम ध्वन्स के लिए, विनाश के लिए, जन उपहास के लिए नहीं होना चाहिए।

५. तुम मेरे उत्तम आदेशों को ही स्वीकारना :

हमारे प्रभु नहीं चाहते कि उनके किसी गलत आदेश को स्वीकार करने के लिए कोई जीव बाध्य हो, (प्रभु चाहे कभी गलत उपदेश देते ही नहीं। तो भी) इसलिए वह आदेश देते है कि इंद्रायभागम् अर्थात् तुम लोग मुझ पर ऐश्वर्यशाली होने के कारण मेरे प्रत्येक आदेश का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हो बल्कि मेरे केवल उस आदेश को ही स्वीकार करना जो जनहितकारी हो, कल्याणकारी हो, सर्वहितकारी हो, जो आदेश आपको अच्छा न लगे उसे आप किसी भी अवस्था में स्वीकार न करना। यहां प्रभु जीव को कर्म की स्वतन्त्रता दे रहा है। हां! यह ध्यान रखना कि तू अपने में प्रकृति का आधिक्य न होने देना, केवल प्रभु का ही आधिक्य तेरे अंदर हो अर्थात् प्रेय-मार्ग पर न चलकर श्रेय मार्ग को अपनाना। श्रेय मार्ग पर चलने वाले का सदा व सर्वत्र सम्मान होता है, जिसे पाने के लिए मानव यत्नशील रहता है। यदि तुम अपने जीवन को ऐसा बना पाए तो निश्चय ही तुम :

६. उत्तम संतानों वाले बनोगे :

जब तुम्हारा जीवन सबका सम्मान पाने में सफल होगा तो तुम निश्चय ही उत्तम संतानों वाले उत्तम प्रजा वाले बनोगे। जिस की संतान उत्तम न हो, जिसकी संतान आज्ञाकारी न हो, जिस की संतान दुर्गुणों से भरी हो, वह व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता, इस कारण सब लोग उत्तम संतान की कामना करते है। इसलिए हमारे श्रेय मार्ग का अवलंबन आवश्यक है, यह मार्ग ही उत्तम संतान प्राप्ति का साधन है।

७. रोगों से बचना :

प्रभु अनमीवा के माध्यम से उपदेश देते हैं कि हे जीव! तू रोगों से ग्रसित मत होना तथा सदा ऐसे उपाय करना कि रोग तेरे को ग्रसित न कर सकें। अपने इस शरीर रूपी रथ से तूने बहुत से काम सम्पन्न करने हैं, भूत की सफलताएं प्राप्त करनी है, कहीं यह टूट न जावे। इसे तोड़ने वाले रोग ही होते है। इसलिए किसी भी रोग को तू अपने शरीर में प्रवेश न करने देना। यदि तू रोग ग्रस्त हो गया तो तेरे जीवन की यह यात्रा बीच में ही रूक जावेगी, पूर्ण न हो सकेगी। इस के साथ ही जो पांचवां उपदेश किया है, इंद्रा भागाम् अर्थात् जब तुम इंद्र भागम का भी ध्यान रखोगे तो तुम कभी भी रोगी न हो पाओगे। यह सब कहने का भाव है कि उस पिता का कोई भी पुत्र, उस पिता का कोई भी भक्त कभी भी किसी रोग का ग्रास नहीं बनता, अस्वस्थ नहीं होता तथा वह प्रकृति में आसक्त नहीं होता। इस कारण रोग उसके पास आ ही नहीं पाते।

८. यक्ष्मा आदि भयंकर रोगों से बचे :

मानव बहुत स्वार्थी प्राणी है। वह जीवन की सुख सुविधाएं बढ़ाने के लिए प्रकृति के नियमों को भी तोड़ता रहता है। इससे अनेक बार वह भयंकर बीमारियों में भी फँस जाता है। प्रभु इससे बचने के लिए प्रेरित करते हुए इस मंत्र के माध्यम से कहते हैं अयक्ष्मा अर्थात् हे प्राणी! तुझे कभी यक्ष्मा जैसे श्वास के भयंकर रोग न हों। इस रोग को राज-योग भी कहते हैं क्योंकि इसके उपचार पर अत्यधिक व्यय करना होता है, (जो साधारण व्यक्ति नहीं कर सकते) तो भी इसका निदान नहीं हो पाता। गरीब व्यक्ति तो इस के निदान के लिए धन की व्यवस्था भी नहीं कर सकता। इस रोग में रोगी का श्वास तेज चलने लगता है तथा उसे श्वास क्रिया में भारी कठिनाई होती है। यह रोग प्रकृति के नियमों को तोड़ने से होता है। इसलिए प्रभु का आदेश है कि प्रकृति के नियमों का संतुलन बनाए रखें, इन्हें अस्त-व्यस्त न होने दें तो तुम इस भयंकर रोग से बच सकते हो। अतः प्रकृति का सदा सन्तुलित प्रयोग करो।

९. बिना पुरुषार्थ कुछ प्राप्त न करें :

जब मानव अपने पुरुषार्थ से, श्रम से कुछ पाता है तो उसे अत्यधिक आनंद का अनुभव भी होता है। किन्तु आलसी, प्रमादी व्यक्ति बिना किसी प्रकार की मेहनत के ही धनवान् बनने की कामना करता है। इस प्रकार जब उसे कुछ मिल जाता है तो वह आलसी बन जाता है, प्रमादी हो जाता है तथा अन्याय पूर्ण कार्य करने लगता है। इसलिए इस मंत्र के माध्यम से ईश्वर आदेश देता है कि माया वः स्तेन ईषत अर्थात् हे मानव! तू अपने मेहनत से, पुरुषार्थ से ही धन को प्राप्त कर आलसी को कभी अपना स्तेन अर्थात् बिना पुरुषार्थ के धन पाने का साधन न बनने देना। इस प्रकार अनेक प्रकार के सटटा, जुआ, लाटरी आदि का

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

भारत का गणतन्त्र दिवस -26 जनवरी

गणतन्त्र दिवस भारत गणराज्य का एक महत्वपूर्ण दिवस है। इस दिन भारत का संविधान लागू हुआ और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। गणतन्त्र दिवस का समारोह मुख्य रूप से देश की राजधानी दिल्ली में मनाया जाता है। प्रत्येक राज्यों में भी इस दिवस को धूमधाम से मनाया जाता है। परन्तु हमें विचार करना है कि गणतन्त्र केवल एक उत्सव नहीं है, जश्न मनाने का मौका नहीं है परन्तु भारत माता के सम्मान के लिए कार्य करने का संकल्प लेना है तथा जिन शहीदों ने इस देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और उन शहीदों के जीवन से प्रेरणा राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देने का दिन है। प्रजातन्त्र इन सभी शहीदों को याद करने उन्हें श्रद्धाजंलि देने का दिन है। एक स्वाधीन देश का नागरिक होने के नाते जो हमारा कर्त्तव्य है उस कर्त्तव्य का पालन करना ही वास्तव में सच्चा गणतन्त्र दिवस है। अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाना, विश्व भर में सम्मानित स्थान दिलाना, देश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने में अपना योगदान देना ही इस दिवस को मनाने का मुख्य प्रयोजन है। अगर हम इस प्रकार देश की उन्नति में अपना योगदान देते हैं तो हमारा देश तरक्की के मार्ग पर अग्रसर होगा।

15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतन्त्र राज्य घोषित किया गया था। तब से लेकर हम इस दिन को सारे भारत वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन से भारत वर्ष ने गुलामी से मुक्त होकर नया जीवन जीना शुरू किया था और साथ ही लोकतान्त्रिक गणराज्य की नींव रखी गई थी। भारत के लोगों ने चिरकाल की गुलामी के बाद सुख की सांस ली थी। पहले हम मुसलमानों के अधीन रहे और फिर सैंकड़ों वर्ष अंग्रेजों के अधीन रहे। पराधीनता में सुख कहां? इसलिए हमारे देशवासियों ने गुलामी की घुटन को महसूस किया और आजादी के लिए संघर्ष करना आरम्भ कर दिया। 1857 से लेकर 1947 तक तो यह संघर्ष लगातार चलता रहा। हमारे देश के अनेक क्रान्तिकारियों और नौजवानों ने अपना बलिदान दिया। उस बलिदान के फलस्वरूप हम 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन हो गए और अंग्रेजों को विवश होकर यहां से जाना पड़ा।

इस आजादी के लिए अनेकों माताओं ने अपने बेटे दिए, अनेकों पत्नियों ने अपने पति दिए और अनेकों बहनों ने अपने भाई दिए। देश के वीर जवानों ने अपना रक्त बहाकर यह स्वाधीनता प्राप्त की थी। यह आजादी की लड़ाई किसी राजा ने नहीं लड़ी थी। उस समय भारत में कई राजा थे परन्तु वह भी अंग्रेजों के गुलाम बने हुए थे। उन्होंने भी इस आजादी की लड़ाई के लिए कोई योगदान नहीं दिया था। देश की सारी जनता ने अपना खून पसीना एक करके इस आजादी को पाया था। इस आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का भी कम योगदान नहीं था। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सबसे प्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया था और भारतीय जनता में देश प्रेम का शंखनाद चारों ओर गुंजाया था। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में भी महर्षि दयानन्द की प्रेरणा कार्य कर रही थी। स्वामी दयानन्द ने स्थान-स्थान पर घूम कर क्रान्ति का शंखनाद किया था। इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों का संगठन करने वाले महान् क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी स्वामी दयानन्द का आशीर्वाद प्राप्त था। उन्हीं की प्रेरणा से वह वहां गए थे और उनके नेतृत्व में इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों ने महान् कार्य किए थे जिससे अंग्रेज सरकार घबरा उठी थी। उधम सिंह ने भरी सभा में अंग्रेज को अपनी गोली का निशाना बनाकर अपनी वीरता का परिचय दिया था। भारत में भी क्रान्तिकारी संगठनों की स्थान-स्थान पर स्थापना हो चुकी थी। राम प्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्र शेखर आजाद, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द और अनेकों क्रान्तिकारियों ने इस आजादी की लड़ाई के लिए अपना तन-मन-धन न्योछावर किया था। इस आजादी की लड़ाई को बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों ने लड़ा था। सभी मत सम्प्रदायों के लोगों ने संगठित होकर इस आजादी की लड़ाई में अपना-अपना योगदान दिया था। उसी के परिणामस्वरूप हमारा देश आजाद हुआ। भारत आजाद होने पर प्रश्न पैदा हुआ कि देश की शासन प्रणाली कैसी हो? इसलिए देश के नेताओं ने मिल कर निर्णय लिया कि अब देश में रजवाड़े शाही नहीं चलेगी। जिस देश की स्वाधीनता एक लम्बे समय तक संघर्ष करके उस देश की जनता ने प्राप्त की है, उस देश में शासन भी जनता का ही होना चाहिए। इसलिए गणतन्त्रीय शासन प्रणाली की व्यवस्था की गई और 26 जनवरी 1950 को उसकी विधि वत घोषणा की दी गई। इस घोषणा के बाद छोटे बड़े सभी राजाओं को तिरंगे झण्ड़े के नीचे आना पड़ा और सभी पर भारतीय संविधान जो इस दिन घोषित किया गया था लागू कर दिया गया।

आज उस दिन को पूरा हुए 68 वर्ष हो गए हैं। हम बड़े गर्व से कह सकते हैं कि हम न केवल स्वाधीन हैं बल्कि आज हमारे देश में प्रजा का अपना शासन है। आज प्रजा की वोटों से ही नेता चुने जाते हैं। यह ठीक है कि आज वोटों के जोर पर कई गलत व्यक्ति भी चुन कर आगे आ जाते हैं जिससे देश का अहित भी होता है परन्तु अगर जनता सावधान होकर अपने वोट का प्रयोग करें तो अच्छे और चरित्रवान् लोगों को आगे आ सकते हैं जो राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं। जनता का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे लोगों को चुनकर संसद और विधानसभाओं में भेजे जो चरित्रवान हों, राष्ट्रभक्त हों तथा जिनके अन्दर राष्ट्र का विकास करने की क्षमता हो। धनबल और बाहुबल के द्वारा जो लोग सत्ता को प्राप्त करते हैं, वे अपने स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरूपयोग करते हैं। ऐसे स्वार्थी और चरित्रहीन नेताओं के कारण राष्ट्र का अहित होता है। ऐसे लोगों का उद्देश्य सिर्फ सत्ता प्राप्त करना होता है। उनके लिए राष्ट्रहित कोई महत्व नहीं रखता।

26 जनवरी के दिन को हम राष्ट्रीय स्तर पर गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। इस दिन को हम देशभक्ति से ओतप्रोत होकर बड़े-बड़े भाषण देते हैं परन्तु राष्ट्र के लिए हमारा क्या कर्त्तव्य है इसका चिन्तन नहीं करते। केवल गणतन्त्र दिवस मना लेने से हम अपने उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। आज आवश्यकता है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्रहित के बारे में चिन्तन करें। जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा, अपने मताधिकार का सही प्रयोग करेगा तभी गणतन्त्र दिवस मनाना सार्थक होगा। देश के प्रत्येक नागरिक का चिन्तन अपना निजी स्वार्थ नहीं होना चाहिए अपितु राष्ट्रहित सर्वप्रथम होना चाहिए। इस प्रकार की भावना हमें प्रत्येक देश के नागरिक के हृदय में भरनी होगी तभी राष्ट्र का चहुंमुखी विकास हो सकता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

वेद शक्ति

ले.-अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम स्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

व्यापार के क्षेत्र में, अमेरिका ने भी वेद के महत्व को स्वीकार कर लिया है। विश्व में, व्यापार के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिद्वंदिता है। व्यापार का क्षेत्र कोई भी हो, आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से लेकर घरेलु उत्पाद तक व्यापारिक बुद्धि में अमेरीकी अग्रगण्य हैं। व्यापार की किसी भी बाधा को लांघने में सर्वप्रथम कहा जाता है। राष्ट्रपति कैनेडी के शांति प्रयासों को शस्त्र निर्माण कम्पनियां बड़ी बाधा समझ रही थीं, इसलिये उन्हें राष्ट्रपति पद से ही नहीं, जिन्दगी से ही हटा दिया। ली ओस्वाल्ड तो एक मोहरा था।

राजनैतिक क्षेत्र में भी, विश्वव्यापी उठा-पटक का मूलाधार व्यापारिक क्षेत्र में अग्रगण्यता बनाए रखना ही है। भले ही वैश्विक शक्तियां मानव-कल्याण भावना का चोगा कितना ही क्यों न ओड़े? चाहे विश्व में शांति-स्थापना की कितनी ही दुंदभी क्यों न बजावें?

प्रधान मंत्री मोदी जी ने अनेक कारणों से यथा रोजगार उपलब्धि, बौद्धिक शक्ति का विदेश-पलायन रोकना, उद्योग-धंधे आदि की स्थापना के कारण 'मेक इन इन्डिया' का केवल नारा ही नहीं दिया बल्कि उसके प्रति गहरी प्रतिबद्धता भी दिखाई है। आयात की शर्तों में सम्बन्धित वस्तु के भारत में निर्माण का प्रावधान भी होगा। इस शर्त में टैक्नॉलोजी ट्रांसफर भी सन्निहित है। मेक इन इण्डिया आह्वान का एक अप्रत्याशित परिणाम यह निकला कि अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री केन्द्र NASA के 372 उत्कृष्ट वैज्ञानिक भारत लौट आए हैं। यह बहुत ही असाधारण बात है कि जो सुख-सुविधा उन्हें यू. एस. ए. में मिल रही थी उसका 50 प्रतिशत मिलना भी यहां मुश्किल है और कार्य के वातावरण में भी जमीन-आसमान का अन्तर है।

प्रस्तुत सन्दर्भ में बाबा रामदेव के सकारात्मक प्रश्न का उल्लेख ही अपेक्षित है। बाबा रामदेव मोदी जी के आह्वान को मूर्तरूप देने में लग गए हैं। उनके दूध कान्ति व दूध उत्पाद उनके दन्त कान्ति, टूथपेस्ट ने अमरीकी कम्पनी कोलगेट के टूथपेस्ट कारोबार मे जबरदस्त घुसपैठ कर दी। अमेरीकी कम्पनी ने अपने उत्पाद कोलगेट सिबाका को 'वेद शक्ति' युक्त कर बाजार में उतार दिया है। 'वेद शक्ति' का विज्ञापन सुन्दर मुस्कुराती हुई युवती, लौंग आदि पदार्थों के झरते हुए दानों में कर रही है। उधर दाढ़ीदार बाबा स्वयं ही विज्ञापन करते हैं। बड़ा अन्तर है लुभाने में।

दूध व अन्य उत्पादनों की सफलता व्यापार ने बाबा रामदेव की कम्पनी को 10 हजार करोड़ से भी अधिक राशि का मालिक बना दिया। अन्य उदाहरण टाटा का है जो देश का नमक बेचकर अरबपति हो गया। आप भी कोई चीज ले आइए-छोटी बड़ी, क्वालिटी उत्पादन कीजिये आप भी कोई न कोई प्रति-लाख करोड़ या अरब हो सकते हैं। प्लेसवटन में बहुत चीजे दिख रही हैं। एक चीज मैं आपको बता देता हूँ। घर के किचन में कैंची मिली। वह टिटेनियम की बनी हैं जिसकी धार नहीं टूटती। जंग लगती नहीं। कभी धार नहीं करानी पड़ी। टिटेनियम स्टील से अधिक मजबूत व हल्का होता है। वेदशक्ति की धार 140 वर्ष पूर्व विश्ववंद्य, विश्वरत्न महर्षि जमा चुके थे। अमेरिका से कर्नल स्काट एवं मैडम ब्लेवेटस्की उनकी यश गाथा सुनकर उनसे मिलने आए थे। महर्षि का सहयोग उन्हें चमत्कार आधारित मत के लिये करना था, इसलिये उनका महर्षि से विरोध होना स्वाभाविक था। महर्षि ने इन लोगों से सम्बन्ध विच्छेद कर लिए। प्रोफेसर मैक्समूलर, लार्ड मैकाले के प्रभाव में आकर, सायण और महीधर के भाष्यानुसार ही वेदों की व्याख्या कर उन्हें निकृष्टतम सिद्ध करने में लगे थे। कालान्तर में जब उन्होंने महर्षि का भाष्य देखा तो वेदशक्ति समझ में आई और अनेक लेखों में भूल सुधार की।

महर्षि के प्रशंसकों में अमेरीकी एन्ड्रयु जैक्सन व इग्लैंड के प्रोफेसर मोनियर विलियम्स थे। प्रोफेसर विलियास ने तो स्वयं के व्यय से महर्षि दयानन्द के इग्लैंड में प्रवचन कराने के लिये उनका समस्त व्यय भार वहन करने का प्रस्ताव भी रखा था। वैज्ञानिक डा. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने जिन्होंने चारों वेदों का अंग्रेजी में भाषान्तर किया था, अमेरिका, अफ्रीका तथा यूरोप के देशों में वेद शक्ति की धाक जमा दी थी। अनेक आर्य विद्वान जिनमें अजमेर के स्वं. धर्मवीर जी एवं आदरणीय वेद प्रकाश श्रोत्रिय प्रभृति लोग हैं और अन्य अनेक संन्यासीगण है, विदेशों में वेदों का डंका बजा रहे हैं।

भारत में वेदशक्ति के प्रचार की महती आवश्यकता है लेकिन समस्त पौराणिक विद्वान, मठाधीश, जगदगुरु शंकराचार्य विभिन्न अखाड़ों के सन्त-महन्त सभी ने आर्यसमाजियों (वैदिक धर्मियों) के मत्थे यह कार्य मढ़ दिया है। तुम्हारे ही संस्थापक, वेदोद्धारक दयानन्द ने यह फ़साद पैदा किया है, तुम ही भुगतो। हम तो उसके जमाने में जैसे थे, वैसे ही रहेंगे। हलुअे-माण्डे, पद प्रक्षालन, चढ़ावे में लाखों की आय, छोड़कर, अवधूत दयानन्द की राह पर न तब चले थे और न अब चलेंगे। यह हमारी भीष्म प्रतिज्ञा है।

अब तो हम से भी आगे निकलने वाले अनेक बाबा पैदा हो गए हैं जो कचौड़ी-समोसे, जलेबी बांट कर लाखों चीर रहे हैं। भभूत बांटने वाले बाबा भी हो गए है। हिन्दु भक्तों को परवाह ही नहीं कि भभूत बांटने वाला, चमत्कार दिखाने वाला बाबा हिन्दु है या मुसलमान। दरगाहें अभी भी हिन्दू भक्तों से भरी पड़ी हैं।

इस इक्कीसवीं में भी, चमत्कारों में विश्वास, सर्वाधिक शिक्षित-अशिक्षित, धनाढय-निर्धन, सभी वर्गों में गहराई तक जड़ जमाए हुए है।

अब सुपुत्री मनीषा कपूर के हैदराबाद में बस जाने पर पता चला है कि वहां एक 'बीजा हनुमान' मंदिर है। वीजा के प्रार्थना पत्र भी फोटो पर रख कर, मनोकामना पूरी करने की प्रार्थना कीजिए। चिरकुट बालाजी के नाम से विख्यात मंदिर के पुजारी धारा प्रवाह अंग्रेजी में घोषणाएं करते रहते हैं। वीजा मिलने पर मंदिर की 108 परिक्रमा कीजिए। चढ़ावा तो स्वेच्छत से भरपूर चढ़ावेंगे ही।

एक अन्य उदाहरण है। होशंगाबाद मध्यप्रदेश में, लैटर बाक्स में से पानी का प्रवाह फूट निकला। चमत्कार की चर्चा सम्पूर्ण नगर में फैल गई। लैटर बाक्स की विधिवत पूजा-अर्चना चालू हो गई। बाद में पता चला कि लैटर बाक्स के नीचे से जाने वाली पाइप लाइन फट गई थी।

उपर्युक्त उद्धरणों में अकाट्य, अंतिम सीमा तक आस्था रखने वाले हिन्दुओं की संख्या, उनकी ईश्वर की अवधारणा, उस ईश्वर के आश्रय स्थल, उस ईश्वर के प्रचार-प्रसार में संलग्न जन आदि के बारे में जानना बहुत आवश्यक है।

सन् 2016 की जनसंख्या गणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1 अरब 32 करोड़ 40 लाख है। 32, 40,000

मुसलमान, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध, आदि शामिल किए जाने पर 100 करोड़ हिन्दु जनसंख्या है। इस जनसंख्या में भी वैदिक धर्मी सहित पौराणिक हिन्दुओं में श्रेष्ठ हिन्दुओं की संख्या 10 करोड़ मान कर भी 90 करोड़ हिन्दु शेष रहते हैं जिनकी आस्था के केन्द्र मन्दिर साधु-सन्त, पीर-फकीर व अन्य चमत्कारी बाबा-बावी हैं राधे मां है।

वैदिक धर्मी संन्यासियों, विद्वानों एवं युद्धग्रस्त संगठन के शीर्ष नेताओं सहित सामान्य जन को स्मरण दिलाना चाहता हूं कि हमारे सामने महर्षि दयानन्द का पुनीत कार्य है। वेदों का डंका आलम में, बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने। महर्षि तो वेदों का डंका बजाकर ब्रह्मानन्द में लीन हो गए है। मोक्ष से पुनरावृत्ति करोड़ो वर्ष बाद की है। इसलिये वेदों का डंका बजाने का कार्य आर्य समाज संगठन पर है। महर्षि आश्वस्त थे कि उनके देहावसान के बाद यह संगठन उनके द्वारा रोपित वृक्ष उनके कार्य को आगे बढ़ावेगा लेकिन 125 वर्ष में ही इस वृक्ष में घुन लग गया है।

ऐसी स्थिति में महर्षि का वेदशक्ति के प्रचार-प्रसार का कार्य कितना दुसाध्य-कठिन एवं बाधाओं से ग्रस्त है आकलन करना आवश्यक है। जरा देखिए तो जिन 90 करोड़ हिन्दुओं में प्रचार करना है उनकी एकान्तिक निष्ठा का केन्द्र मन्दिर है, जिनकी आय का विवरण ही चौंकाने वाला होगा। **(क्रमशः)**

नैतिकता की अवधारणा

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

आओ। अब हम शास्त्रों को आधार बनाकर इस विषय पर चिन्तन करें। मानव जीवन का लक्ष्य है, यतोभ्युदय नि: श्रेयस सिद्धि सधर्म:। वैशे दर्शन अर्थात् हमें इस जीवन में विकास के शीर्षस्थ स्थान पर पहुंचकर ही रूक नहीं जाना है वरन् मोक्ष की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम भी करना है। वास्तव में यह कार्य अत्याधिक कठिन भी है तभी तो सांख्य के आचार्य कहते हैं, 'अथ त्रिविध दु:ख अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त पुरूषार्थ। वैदिक ऋषियों ने इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए हमारे सामने दो समुच्चय प्रस्तुत किए हैं। पहला समुच्चय है ज्ञान, कर्म और उपासना तथा दूसरा समुच्चय है धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष। अब हम ज्ञान कर्म और उपासना पर चर्चा करते हैं। वेदों में ज्ञान के स्थान पर विद्या का बार-बार प्रयोग हुआ है। फिर विद्या के दो भाग कर दिये है अपरा और परा विद्या। अपरा विद्या वह है जिससे पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना। दूसरी परा विद्या वह जिससे सर्व शक्तिमान पर ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है। वर्तमान काल में हम इस अपरा विद्या को ही शिक्षा के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह अपरा विद्या अथवा शिक्षा ही हमें अभ्युदय के शीर्ष पर पहुंचाने का कार्य करती है। हमें इसे कर्म के साथ जोड़ना होता है और तभी यह हमें अभ्युदय प्राप्त कराती है।

अन्धं तम: प्रविशन्ति येऽविद्या मुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रता:।। यजु. 40.9

जो लोग अविद्या (कर्म काण्ड) का ही सम्पादन करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो लोग विद्या में ही रत रहते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकार को प्राप्त होते हैं।

विद्याञ्चाविद्या च यस्तद् वेदोभयँ सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्या-यामृतमश्नुते।। यजु. 40.11

जो ज्ञान और कर्म इन दोनों को साथ-साथ जानता है वह कर्म से मृत्यु को तैर कर ज्ञान से अमरता को प्राप्त होता है। इस प्रकार कर्म और ज्ञान के सम्मिलित प्रयोग से हम अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

नीति शास्त्र हमें वह शिक्षा देता है कि जिससे हमें सर्वदा सफलता ही प्राप्त होती है। नीति शास्त्र के क्रियात्मक स्वरूप को ही नैतिकता कहा जाता है। यदि शिक्षा के साथ नैतिकता जुड़ी हुई नहीं है तो हम उस शिक्षा से विशेष लाभ प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। उदाहरण स्वरूप जैसे हम जपते हैं-

'ओ३म् भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धी महिधियो न: प्रचोदयात्। यह गायत्री मंत्र यजुर्वेद में चार स्थानों पर आया है परन्तु केवल यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 में भू:, भुव: और स्व: का प्रयोग हुआ है। गायत्री मंत्र में यहां तीन व्याहृतियों इसलिए लगाई है कि हम परमात्मा से जो मांगने जा रहे हैं वह हमें अवश्य प्राप्त होवे। हम परमात्मा से पहले कहते हैं कि प्रभु आप हमारे (भू) एक मात्र आश्रय हैं, आधार है फिर कहते हैं कि प्रभु आप हमारे (भुव:) दु:ख विनाशक हैं। हम दु:खी होकर जब भी आपकी शरण में आए हैं तब आपकी कृपा से हमारे दु:ख दूर हो गए हैं। आप तो स्व: सुख स्वरूप अजन्मा अनादि हैं। हमने अब तक यह जो भूमिका बांधी है उसे नैतिकता कहा जाता है। इतना कहने के उपरान्त हम परमेश्वर से उसके तेज या ज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं, साथ ही उसे बता देते है आपके उस ज्ञान को हम अपने हृदय में धारण करेंगे, वह हमारी बुद्धि को पवित्र करेगा जिससे हमें श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होगी। इसी प्रकार हम जहां भी शिक्षा के साथ नीति को जोड़ देंगे वहीं हमें सफलता प्राप्त होगी। नैतिक जीवन जीने का अर्थ है नीति शास्त्र सम्मत आचरण का जीवन में धारण करना।

महाभारत के शांति पर्व के अध्याय 68 में श्लोक 28 का कथन है-

'यज्जेत त्रयो दण्डनीतो हतायां सर्वे धर्मा: प्रक्षये युर्वि वृद्धा:।

सर्वे धर्माश्चाश्रमाणां हता: स्यु: क्षात्रे त्यक्ते राज धर्मे पुराणे।'

अर्थात्-राजा की दण्डनीति सशक्त न होवे तो ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद तीनों रसातल को चले जाएं तथा वेदों के लुप्त होने से समाज में प्रचलित हुए संस्कृति और सदाचार के आधार समस्त धर्म नष्ट हो जाएं तथा ब्रह्मचर्यादि चारों आश्रमों की मर्यादा भी ध्वस्त हो जाए। राजधर्म और राजनीति का विनाश होने पर समस्त लोक व्यवस्था के भी लुप्त होने की संभावना बन जाती है। नीति का अर्थ होता है जिसके द्वारा जनता को सदाचार में स्थापित किया जाता है। उसे कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर अग्रसर किया जाता है। 'नयनान् नीति रूच्यते' शुक्रनीति अध्याय 1 श्लोक 157 प्रजा को धर्म के मार्ग पर ले जाने के कारण ही उसे नीति कहते हैं और नीति के प्रयोग की विधि ही नैतिकता कहलाती है। वेदों, दर्शनों, उपनिषदों, नीति शास्त्रों, स्मृति ग्रन्थों, धर्म सूत्रों आदि में नीति के विषय में विस्तृत वर्णन हुआ है। अब हम इन ग्रन्थों के आधार पर नीति और नैतिकता के विषय में चर्चा करते हैं।

'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव व युनानि विद्वान्'। यजु. 40.10

हे प्रकाश स्वरूप परमात्मा। आप सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार हैं तथा प्राणियों को सुख के देने वाले हैं। कृपा करके हमें विज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए धर्म युक्त आप्त पुरूषों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये। धर्म युक्त आप्त लोगों के मार्ग पर चलना ही नैतिकता है।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

इदमहमनृतात सत्यमुपैति।। यजुर्वेद 1.51

हे अग्नि स्वरूप सम्पूर्ण व्रतों के स्वामी परमात्मा। मैं आज असत्य से भिन्न सत्य बोलना सत्य मानना और सत्य ही करने का व्रत ले रहा हूँ। मेरे इस व्रत को सिद्ध करने के लिए आप मुझे शक्ति प्रदान करें। यह सत्य का पालन ही नैतिकता है।

अनुव्रत पितु: पुत्रो मात्राभवतु संमना:। जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्तिवाम्। अथर्व. 3.30.2

पुत्र पिता का अनुव्रती हो अर्थात् पिता जिन श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करता रहा है वैसे ही श्रेष्ठ आचरण पुत्र भी अपने जीवन में धारण करे तथा उसके विचार अपनी माता के मन के अनुकूल होवें। पत्नी पति के साथ मधुर वाणी से संवाद करे और सदैव ऐसी वाणी बोले जिससे शान्ति का वातावरण बने। इस प्रकार कार्य करना ही नैतिकता कहलाता है।

जब यह शिक्षा में स्थान प्राप्त करेगा तभी सफलता प्राप्त होगी।

येन देवान वियन्ति नो च विद्विषते मिथ:।

तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरूषेभ्य:।। अथर्व. 3.30.4

हे गृहस्थों। मैं ईश्वर जिस प्रकार के व्यवहार से विद्वान् लोग परस्पर पृथक् भाव वाले नहीं होते और परस्पर में द्वेष कभी नहीं करते, वही कर्म तुम्हारे घर में निश्चित करता हूँ। पुरूषों को अच्छी प्रकार चिताता हूँ कि तुम लोग परस्पर प्रीति से वर्त कर धन और ऐश्वर्य को प्राप्त करो।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। ऋ. 10.191.2

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।

पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्यों के मानी बनो।

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।

समानामस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋ. 10.191.4

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।

मन भरें हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।

स्योना भव श्वशुरेभ्य स्योना पत्ये गृहेभ्य:।

स्योना स्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।। अथर्व. 14.2.27

हे वधू। तू श्वशुरादि के लिए सुख प्रदाता बन। पति के लिए सुख प्रदाता बन और इस सब प्रजा के लिए सुख प्रदाता बन।

अब योग शास्त्र के आधार पर विचार करते हैं।

तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्म-चर्यापरिग्रहायमा:।। यो. 2.30

(अहिंसा) वैर त्याग (सत्य) मन, वचन और कर्म में एक रूपता सत्य ही सोचना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) मन, वचन और कर्म से चोरी का त्याग अर्थात् किसी भी व्यक्ति की वस्तु को उसके स्वामी की आज्ञा बिना न लेना, (ब्रह्मचर्य) लगातार ब्रह्म चिन्तन एवं उपस्थेन्द्रिय पर नियन्त्रण (अपरिग्रह) स्वत्वाभिमान रहित होना तथा भौतिक पदार्थो का संग्रह से बचना। ये पांच यम कहलाते हैं। इन्हें ही जैन धर्म में पांच महाव्रत कहा जाता है।

शौच संतोष तप: स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमा:। यो. 2.32

(शौच) शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पवित्रता (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर धर्म के मार्ग से पुरूषार्थ करके अर्थ उपार्जन करना और जो धन प्राप्त होवे उसी से सन्तुष्ट रहना (तप:) धर्म के मार्ग पर होने वाले कष्टों को सहज स्वीकार करना (स्वाध्याय) आर्व ग्रन्थों का नित्य पठन पाठन करना और (ईश्वर प्रणिधान) ईश्वर की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-प्रभु प्रेरणा से हम...

कभी प्रयोग न करना क्योंकि यह बिना श्रम के धन प्राप्ति के साधन होते हैं। इस प्रकार से धन पाने वाला व्यक्ति काम, चोर, प्रमादी, आलसी, आराम पसंद बनकर अनेक प्रकार की बिमारियों में फंस जाता है।

१०. अपने कुकृत्यों को छुपा नहीं :

प्रभु का आदेश है कि मानव को अपने कुकृत्यों को कभी झुठलाने का, इन्हें छुपाने का प्रयास नहीं करना चाहिये। ऐसे व्यक्ति को अपनी कमियों को, भूलों को न्याय संगत ठहराने के लिए अनेक झूठ बोलने पडते हैं, अनेकों के हितों की हानि करनी होती है। इसलिए प्रभु मया आगशन्स: के भाव में कह रहे हैं कि अपने पाप को कभी भी अच्छे रूप में प्रकट न करना। इतना ही नहीं कोई अन्य व्यक्ति भी तुम्हारे विकारों पर शासन न करे अर्थात् आप स्वाधीन हो अपना कार्य करें तथा अपने विचार रखें किसी और के आदेश पर अपने विचार न बनावें।

११. तुम सदा अटल, ध्रुव रहना:

प्रभु कहते हैं कि हे मानव तू इस गोपतौ में, इस जगत् में सदा ध्रुव के समान स्थिर रहना, अटल रहना। इस संबंध में वेद के यह शब्द प्रयोग करते हुए कहते हैं ध्रुवाअस्मिन गोपतौ स्यात् अर्थात् तू सदा अटल रहना। गौवें ही हमारी इन्द्रियाँ है तथा इन इंद्रियों का रक्षक स्वयम् प्रभु होता है। हम गौओं को वेदवाणी के रूप में भी ले सकते है। हम यह भी जानते हैं कि वेदवाणी का पति, मालिक हमारा वह पिता ही तो होता है। यदि तुम उत्तम वेदवाणी के प्रकाश में प्रकाशित होना चाहते हो तो वेदवाणी के मालिक प्रभु में ध्रुव के समान स्थिर होकर रहना। प्रभु हमारे चक्की की धुरी है। चक्की में पड़ा हुआ वह दाना ही बच पाता है जो इस की धुरी को पकड़ लेता है। ठीक इस प्रकार ही इस जगत् में वह प्राणी ही बच पाता है जो प्रभु को पकड़ लेता है, उसे छोड़ता नहीं।

१२. समाज में रहते हुए औरों का सहयोगी बनना :

प्रभु जीव को वह्नि अर्थात् दूसरों का सहयोगी बनने का उपदेश देते हैं तथा कहते है कि हे प्राणी! तू कभी भी आत्मकेंद्रित न होना, केवल अपने ही बारे में न सोचना, कभी स्वार्थी न बनना। तू एक सामाजिक प्राणी है इस लिए सदा अधिक से अधिक लोगों से संपर्क बनाने का प्रयास करते रहना। दूसरों के संपर्क में रहना। इस बात का सदा ध्यान रखना कि मैं एक न रहूं बल्कि एक से बहुत हो जाऊं। केवल स्वयम् ही सुखी होने का यत्न न करना बल्कि दूसरों के सुखों को बढ़ाने के लिए उन के दु:खों को भी दूर करने का प्रयत्न करते रहना।

१३. कामादि को सुरक्षित रखना:

आप जानते हैं कि इस संसार की किसी भी उत्तम वस्तु की रक्षा करने की व्यवस्था नहीं करनी होती, वह स्वयमेव ही वितरित होती रहती है किन्तु हानिकारक पदार्थों को छुपाना पड़ता है ताकि यह बुरी वस्तु किसी के हाथ में आकर हानि का कारण न बन जावे। यजमानस्य शब्द के माध्यम से प्रभु इस वेद मंत्र में यह भी अन्तिम आदेश या अन्तिम प्रेरणा दे रहे हैं कि हम काम, क्रोध आदि हमारे अंदर के शत्रुओं को, इन पाश्विक वृत्तियों को गुप्त स्थान पर सुरक्षित करके रखें किसी को हाथ न लगाने दें। यदि यह दुष्ट वृत्तियां किसी ने प्रयोग में ले लीं तो भारी विनाश का कारण बन जावेंगी। हम उपयोगी वस्तुओं को तो खुले में रखते हैं किंतु हानि देने वाले पदार्थों तेज़ाब आदि को अलमारी में ही रखते है क्योंकि इससे भारी हानि की संभावना होती है। हम चिड़ियाघर देखने जाते है, वहां देखते है कि साधारण जीव तो खुले में घूम रहे होते है किन्तु बाघ आदि को बड़े भारी पिंजरों में रखा होता है। कुछ ऐसा ही हमारी बुराईयों के लिए भी होता है। काम-क्रोध आदि भी हमारे जीवन का भाग होते हैं किन्तु इन्हें संभालने की आवश्यकता होती है। कामादि संसार को चलाने की क्रिया है। इस की संसार में आवश्यकता है किन्तु इसके अनियंत्रित होने पर शक्ति का विनाश होता है, शक्ति का क्षय होता है।

इसे संतुलित व संयमित करना भी आवश्यक है। इस प्रकार ही कोश अथवा दोष भी जीवन में आवश्यक है किन्तु इस का भी संतुलित होना आवश्यक है अन्यथा विनाश होगा।

इस मंत्र के आरंभ में जीव ने परम पिता परमात्मा से उसे प्रेरणा देने की प्रार्थना की थी। पिता अपने पुत्र की इच्छा को कैसे टाल सकता था। अत: प्रभु ने उसे इस मंत्र के ही माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रेरित किया। उसे प्रेरित करने के लिए उस ने उसे सत्य के तेरह स्वरूप दिखाए। इन तेरह उपदेशों को अपनाने वाला जीव ही अंत में परम स्थान में स्थित होता है। यह जीव अपनी प्रजा की रक्षा करने के कारण प्रजापति भी कहलाता है। जो भी जीव इन तेरह उपदेशों पर चलेगा, वह निश्चय ही उन्नति की लहरों की छाती पर तैरेगा, पर्वतों की चोटी के समान ऊंचा उठेगा।

पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

वैदिक शिक्षा परिशद् फाजिलका द्वारा आयोजित ''वैदिक ज्ञान परीक्षा एवं रंग भरो प्रतियोगिता-2017 का पारितोषिक वितरण समारोह आर्य समाज मन्दिर फाजिलका में 10 जनवरी 2018 को अत्यन्त हर्षोल्लास से डॉ. नवदीप जसूजा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्यतिथि के रूप में डॉ. रेणु धूड़िया और विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अरुण आर्य एवं श्री सुभाष कटारिया एडवोकेट ने अपने-अपने आसन को सुशोभित किया।

परीक्षा संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री ने बताया कि वैदिक ज्ञान परीक्षा प्राइमरी, मिडल, मैट्रिक, सेकण्डरी एवं कॉलेज स्तरीय पांच ग्रुपों में आयोजित की गई। जिसमें अबोहर तथा फाजिलका के छ: कॉलेज तथा 14 स्कूलों के 900 छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए। सभी ग्रुपों के प्रथम स्थान प्राप्त छात्र क्रमश: नेहा, काव्या, हरमनप्रीत कौर, बेअन्त सिंह, किरण, कविता एवं मनदीप कौर रहे।

रंग भरो प्रतियोगिता में 13 स्कूलों के 920 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। यह प्रतियोगिता प्रीनर्सरी, नर्सरी, एलकेजी, यूकेजी, पहली और दूसरी कक्षा तक छ: ग्रुपों में सम्पन्न हुई। सभी ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त तथा प्रोत्साहित छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। रंग भरो प्रतियोगिता सर्वाधिसंख्य सहभागिता के आधार पर सर्वहितकारी विद्या मन्दिर ने 520 बच्चे सम्मिलित करके ''सर्वोच्च सहभागिता अलंकरण'' प्राप्त किया।

परीक्षा में सहयोगी शिक्षकों, परीक्षकों, पर्यवेक्षकों को भी स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शास्त्री जी के अनुसार परीक्षा का मुख्य उद्देश्य धर्म के यथार्थ स्वरूप से परिचय, नैतिक, चारित्रिक विकास, राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं दृढ़ विश्वास, अन्धविश्वास, रूढ़िवाद-पाखण्ड-छुआछूत-भेदभाव सदृश कुरीतियों के प्रति जागृति उत्पन्न करना तथा धर्म के नाम पर फैली भ्रान्त धारणाओं के प्रति वैज्ञानिक सोच जागृत करना है।

समारोह के अध्यक्ष डॉ. नवदीप जसूजा, मुख्यातिथि डॉ. रेणु धूड़िया एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष कटारिया एडवोकेट और श्री अरुण आर्य ने सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इन सभी अतिथियों को परिषद् की ओर से सम्मानार्थ स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए समारोह की शोभा बढ़ाने हेतु आभार व्यक्त किया गया। अन्त में शास्त्री जी ने सभी छात्रों, शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों का सहयोगार्थ हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ। **-वेदप्रकाश शास्त्री परीक्षा संयोजक**

स्कूल में जरसियां व प्रसाद बांटा तथा स्कूल के रंग रोगन के लिए 51 हजार रुपए भेंट किये

तपा मंडी, एस. एन. आई हाई स्कूल तपा के मैनेजर तेज पाल पक्खो की तरफ से हर साल की तरह अपनी माता जी की याद में हवन यज्ञ करवाया गया। उनके सुपुत्र नरेश कुमार के पक्ष से कारसपोडैट आर्य स्कूल की तरफ से अपनी दादी की बरसी मौके ४० जरूरतमंद विद्यार्थियों को जरसियां प्रदान की गईं और स्कूल के समूह विद्यार्थियों में प्रसाद बाँटा गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सदस्य सी. मारकंडा ने परिवार का धन्यवाद करते कहा कि तेज पाल की तरफ से पहले भी अपनी पत्नी की याद में कंप्यूटर लैब बनवा कर दी गई है। आर्य स्कूल के रंग रोगन के लिए 51 हजार रुपए भेंट किये। इस मौके स्कूल के प्रधान डा. राज कुमार शर्मा, मुख्य अध्यापक राम गोपाल, मक्खन सिंह ताजो, हरबंस शर्मा, मास्टर पवन कुमार, डा. मदन लाल और पवन कुमार बत्रा आदि उपस्थित थे।

पृष्ठ 5 का शेष-नैतिकता की अवधारणा

भक्ति विशेष में आत्मा को लगाए रखना।

उपनिषदों में भी नैतिकता का विशद वर्णन हुआ है।

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यान्मा प्रमदः।। तैति. 1.11.1

सदैव सत्य बोलो। सदैव धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में कभी भी प्रमाद मत करो।

देव पितृ कार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृ देवो भव। पितृ देवो भव/आचार्य/देवो भव/ अतिथि देवोभव/यान्यवद्या नि कर्माणि तानि त्वयो पास्यानि नो इतराणि।। तैति. 1.11.2

देव पितृ कार्यो में कभी प्रमाद मत करना। माता को देवी मानना। पिता को देवता मानना। आचार्य को देवता मानना। अतिथि को देवता मानना। हमारे जो श्रेष्ठ आचरण हैं उनका अनुगमन करना। दूसरों का अनुगमन मत करना।

ये के चास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणाःतेषां त्वया ऽऽ सनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रियादेयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। तैति. 1.11.3

और जो कोई हमसे श्रेष्ठ अन्य ब्राह्मण हैं। उनका तुमको आसन से सत्कार करना चाहिए। श्रद्धा से दान करना चाहिए। अश्रद्धा से भी दान करना चाहिए। प्रसन्नता से दान देना चाहिए। लज्जा से दान देना चाहिए। भय से भी दान देना चाहिए। प्रेमभाव से दान देना चाहिए।

गोस्वामी तुलसी दास जी कहा है-परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अदमाई। अब शुक्रनीति पर विचार करते हैं।

सर्व लोक व्यवहार स्थिति-र्नीत्मा बिना न हि।

यथाऽशनैर्बिना देह स्थितिर्न-स्याद्धि देहि नाम।। शुक्र. 1.11

जिस प्रकार भोजन के बिना शरीर की स्थिति नहीं हो सकती। उसी प्रकार नीति शास्त्र के बिना सम्पूर्ण लोक व्यवहार की स्थिति भी नहीं हो सकती है। संसार के संचालन की नीति को नीति शास्त्र के अतिरिक्त कोई भी नहीं बना सकता है।

विद्यायाश्च फलं ज्ञानं विनयस्य फलं श्रियः।

यज्ञ दाने बल फलं सद्रक्षण-मुराहृतम्।। शुक्र. 3.92

विद्या का फल ज्ञान, विनय का फल श्रेष्ठता, धन का फल यज्ञ और दान है। बल का फल सज्जनों की रक्षा करना है।

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

यत्रै तास्तुन पूज्यन्ते सर्वास्त-त्राऽफलाः क्रिया।। मनु. 3.56

जिस घर में स्त्रियों का मान होता है उस घर में विद्वान् लोग आनन्द से क्रीड़ा करते हैं परन्तु जिस घर में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता है उस घर में सब क्रिया निष्फल हो जाती है। स्त्रियों का सम्मान करना नैतिकता है।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।। मनु. 2.121

जो व्यक्ति नित्य ही वृद्धों का अभिवादन करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ता है। मनु. स्मृति 2.199 में कहा गया है कि अपने आचार्य का सामान्य सम्बोधन में नाम न लें। इसी प्रकार मनुस्मृति 2.212 में कहा गया है कि युवती गुरू पत्नी का चरण स्पर्श न करके दूर से ही अभिवादन करें।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रिंय च नानृतं ब्रूयादेष धर्म-सनातनः।। मनु। 4.138

सदा प्रिय और दूसरे का हितकारक बोले, अप्रिय सत्य न बोले, दूसरों को प्रसन्न करने के लिए असत्य भी न बोले। यही सत्य सनातन धर्म है, यही नैतिकता है।

धर्म सूत्रों में तो किस तरह उठें, बैठे, चले, भोजनादि करने पर भी पर्याप्त वर्णन हुआ है। धर्म सूत्रों में प्राचीनतम धर्म सूत्र गोतम धर्म सूत्र है। उसी में से कुछ चिन्तन करते हैं।

आचार्य तत्पुत्र स्त्री दीक्षिप्त नामानि। गो. धा. सू. 1.2.24

आचार्य, उनके पुत्र, उनकी पत्नी तथा दीक्षा लेने वालां के नाम उच्चारण नहीं करना चाहिए।

शय्यासन स्थानानि विहाय प्रतिश्रवणम्।। गो. ध. सू. 1.2.30

गुरू के कुछ पूछने पर शय्या, आसन और स्थान से उठ कर उत्तर देना चाहिए।

गच्छन्तं गुरूमनुगच्छेत्।। गो. ध. सू. 1.2.33

गुरू के चलने पर उनके पीछे-पीछे चले।

अनिचयो भिक्षुः।।गो. ध.सू. 1.3.10

सन्यासी को संग्रह नहीं करना चाहिए।

पादोप संग्रहणं समवाये-ऽन्वहम्।। गो. ध. सू. 1.6.1

प्रतिदिन माता-पिता आदि के मिलने पर उनके चरण स्पर्श करने चाहिए।

सन्निपाते परस्य।।गो. ध. सू. 1.6.4

माता-पिता आदि सभी श्रेष्ठजनों के एक साथ भेंट होने पर इनमें सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति का चरण सर्वप्रथम स्पर्श करे।

श्रुतं तु सर्वेभ्यो गरीयः।। गो. ध. सू. 1.6.19

वेद का ज्ञाता ही सर्व श्रेष्ठ होता है।

मैं समझता हूँ कि यदि शिक्षा में इन सबका समावेश न होवे तो शिक्षा अधूरी ही है।

लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति पावन पर्व

आर्य समाज धूरी में लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति का पावन प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाशय प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में व आर्य समाज के प्रधान विरेन्द्र कुमार गर्ग, महामन्त्री प्रहलाद कुमार आर्य अगुवाई में आर्य सी. सै. स्कूल, धूरी के प्रागण में बड़े धूम-धाम से मनाया गया। आर्य स्कूल के प्रागण में, लोहड़ी अग्नि प्रज्जल प्रज्वलित की गई और आर्यसमाज धूरी के चारों शिक्षण संस्थाओ के अध्यापक अध्यापिका एवं छात्र-छात्राओ ने मूगफलियाँ, गच्चक, रेवड़ी, शक्कर, तिल, डाल कर इस अग्नि में यज्ञ किया, यज्ञ के उपरान्त यश चौधरी आर्य माँडल, आर्य सी० सै० स्कूल, आर्य महिला कालेज व महाशय चेतराम आर्य टेक्निकल कालेज के छात्र-छात्राओ ने पंजाब का लोक संगीत डास गिद्दा, भगड़ा सांस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम का संचालन रामपाल आर्य ने बहुत ही लोकप्रिय व रोचकता से किया तथा M.C.R, ARYA; MEMORIAL TEXHNICAL INSTITUTE प्रथम साल BCA और B,COM में Admission लेने वाले छात्र-छात्राओ को आर्य समाज के चेयरमैन, श्याम आर्य जी के तरफ से गर्म कम्बल देकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज के चारों शिक्षण संस्थाओं प्रिंसिपल बी. एल. कालिया, श्रीमति मोनिका वाटस, श्रीमति निशा मितल, श्रीमति ऋचा गोयल व महाशय चेतराम ट्रेक्निकल कालेज उपप्रधाना आरती तलवाड़ उपस्थित रहे, तथा आर्य समाज के सभी अधिकारी व सदस्यों ने बड़ी ही धूमधाम से मनाया। समाज के कार्यकारी प्रधान सोम प्रकाश आर्य, राजीव मोहिल, कोषाध्यक्ष पवन कुमार गर्ग, वासुदेव आर्य, सुधीर सिंगला महाशय राजपाल आर्य, अशोक जिन्दल, डॉ. सुरजीत सरीन, डॉ. रामलाल आर्य, अशोक गर्ग, विकाश शर्मा, आर. पी. शर्मा, शतीश पाल आर्य, मैनेजर यश चौधरी माडल स्कूल, विवेक जिन्दल, रमेश आर्य, वचन लाल गोयल, कर्मचन्द जिन्दल आर्य, अरुण गर्ग, तथा स्त्री आर्य समाज के श्रीमति कृष्ण आर्य, मधुरानी, उर्मिला देवी, दर्शना देवी, शशी सरीन, निगमपाल, शिमला देवी, कुसुम गर्ग व आर्य समाज के सभी सदस्य भी उपस्थित रहे, और इस मकर संक्रान्ति व लोहड़ी में कार्यक्रम का पुरा खर्च समाज सेवी महाशय प्रतिज्ञा पाल जी के तरफ से किया गया। सभा के अन्त में प्रधान जी ने सभी आए हुए महानुभावो को लोहड़ी व मकर संक्रान्ति की शुभकामनाए के साथ सब को धन्यवाद किया। **-प्रहलाद कुमार आर्य महामंत्री आर्य समाज धूरी, पंजाब**

लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति पर्व मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में लोहड़ी एवं मकर सक्रांति के उपलक्ष्य में Kite Making प्रतियोगिता करवाई गई। इसमें कक्षा प्रथम से कक्षा आठवीं तक के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। बच्चों ने बड़ी सुन्दर-सुन्दर आर्कषक पतंगे बनाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कक्षा नवम् से कक्षा बारहवीं तक के छात्रों के लिए Kite Flying का आयोजन किया गया। आसमान रंग विरंगो पतंगो से 'आई-बो' की आवाजों से गूंज उठा। बच्चों ने सुन्दर मुन्दरिए गीत गाकर लोहड़ी मांगी। Kite Making प्रतियोगिता में कक्षा सातवीं की माही ने प्रथम कक्षा आठवीं की मनीशा ने द्वितीय एवं कक्षा पांचवी के आशु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। Kite Flying प्रतियोगिता में कक्षा दसवीं के लवप्रीत एवं रितीक ने प्रथम एवं कक्षा दसवीं के रसनप्रीत एवं प्रेमपाल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विजेता छात्रों को प्रिंसीपल मैडम की तरफ से सर्टीफिकेट द्वारा सम्मानित किया गया। स्कूल की प्रबंधकीय कमेटी के सदस्यों ने समस्त स्टाफ एवं छात्रो का लोहड़ी और मकर संक्राति की बधाई दी। इस अवसर पर बच्चो को मूंगफली रेवड़िया भी बांटी गई। प्रिंसीपल मैडम ने बधाई देते हुए कहा कि आज समय चाहे बदल गया है लेकिन लोहड़ी के त्यौहार को आज भी आपसी भाईचारे और पंजाबी संस्कृति का त्यौहार माना जाता है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20 RNI No. 26281/74

बसन्त पंचमी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी में बसन्त पंचमी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित आर्य समूह।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में बसन्त पंचमी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य यजमान कुमार अभिषेक, प्रिया शर्मा ने यज्ञ में पवित्र आहूतियां प्रदान की। हवन यज्ञ पंडित शिवा शास्त्री ने मंत्रोच्चारण से करवाया। इसके पश्चात भजन गायिका सोनू भारती एवं सीमा अनमोल ने प्रभु भक्ति के भजन सुना कर श्रद्धालुओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। पंडित जी ने बताया कि बसन्त पंचमी का पर्व ईश्वर की रचना का प्रतीक पर्व है। पर्व भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। पर्वों के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। हमारे देश की संस्कृति की नींव हमारे ऋषियों–मुनियों द्वारा प्रदत्त वैदिक संस्कृति का ज्ञान है। भारतीय पर्व इसी वैदिक संस्कृति के अन्तर्गत आते हैं। संस्कृत भाषा में त्यौहारों को पर्व भी कहते हैं। पर्व का दूसरा अर्थ जोड़ होता है, जैसे हमारे शरीर में हड्डियों का जोड़ होता है। जिनके कारण शरीर सीधा होकर गति करता है। इसी प्रकार गन्ने और बाँस में भी जोड़ होते हैं। पौधों को सीधा खड़ा करने के लिए जोड़ होता है। इसी प्रकार हमारे राष्ट्रीय जीवन में यही महत्त्व पर्वों का होता है। जिस प्रकार शरीर में से हड्डियों को निकाल दें तो शरीर न रहकर केवल मांस का लोथड़ा रह जाता है, इसी प्रकार हमारे जीवन में से त्यौहारों को निकाल दें तो हमारा जीवन मृत प्रायः रह जाता है। समय-समय पर आने वाले त्यौहार जहां हमारे जीवन में आनन्द उत्साह पैदा करते हैं, वहां सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्वरूपों का दिग्दर्शन कराके हमें अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। हमारे देश अनेक पर्व आते हैं जिन्हें हम मिलजुल कर आनन्द और उत्साह के साथ मनाते हैं। ऐसे ही प्रेरणा और उत्साह देने वाला बसन्त पंचमी का पर्व भी है।

बसन्त पंचमी का दिन जहां ऋतु परिवर्तन की दृष्टि से अपना महत्व रखता है वहां अपने साथ एक महा बलिदानी, धर्मनिष्ठ भारतीय वीर की याद ताजा कर देता है। इस बलिदानी वीर का नाम हकीकत राय था, जिसने अपनी छोटी सी आयु में जीवन की हकीकत को समझा था, धर्म के साथ निभाया था और अपनी भारतीय परम्पराओं का मुख उज्जवल किया था। वीर हकीकत के जीवन चरित्र को पढ़ने से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने पूर्वजों के यशस्वी जीवन की प्राणपन से रक्षा करनी चाहिए। किसी में यह साहस न हो कि हमारे पूर्वजों का अपमान कर सके या हमारे धार्मिक सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ा सके। आयु की दृष्टि से वीर हकीकत छोटे थे परन्तु अपने धर्म के प्रति उत्सर्ग का ऊंचा भाव निज बलिदान द्वारा जो प्रस्तुत किया वह किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला है।

वीर हकीकत को डराया गया, धमकाया गया, प्रलोभन दिए गए, अपना धर्म छोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश की गई परन्तु वीर हकीकत उनके भय और प्रलोभन से जरा भी विचलित नहीं हुए। अपना धर्म परिवर्तन करके प्राणों को बचाने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की।

पंडित मनमोहन शास्त्री जी ने कहा कि गृहस्थ जीवन ही सुखों की खान है। इस अवसर पर ईश्वर चंद रामपाल, चौधरी हरी चंद, श्री बैजनाथ, उर्मिला भगत, कुबेर शर्मा, नंदिनी शर्मा, केदार नाथ शर्मा, नलिनी उपाध्याय, सुरेश ठाकुर, राजीव शर्मा, प्रभात निर्मल, डा. महेन्द्र निर्मल, हर्ष लखनपाल, शशि मित्तल, सुरिन्द्र अरोडा, सुभाष आर्य, वंश आर्य, सुदर्शन शर्मा, ओम प्रकाश मेहता, ललित मित्तल, नीना मित्तल, अमित शर्मा, हितेष स्याल, अंकुल गोयल, साक्षी गोयल, केदारनाथ शर्मा, मीनू शर्मा, सन्या आर्य, इन्दु आर्य, धर्मेन्द्र कुमार, ज्योति कुमारी, मीनू शर्मा, अनिल शर्मा, राजेश पंचाल, दीपा पंचाल, रेखा शर्मा, अशोक शर्मा, रसिक वर्मा, नेहा वर्मा, राजेश वर्मा, अनिल अरोडा, रजनी अरोडा, अंजुला भास्कर, रजत दुग्गल, पूनम दुग्गल, हरविन्द्र सिंह, असीम मिश्रा, गीतांजलि मिश्रा, विकास धीर, अर्चना मिश्रा, रिया शर्मा, विनोद कुमार, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, दीपक सूरी, बबीता सूरी, नवीन कुमार चावला, अदिति चावला, विजय कुमार चावला, दिलीप कुमार, रक्षा कुमारी, कुलदीप सिंह, बिहारी लाल ठाकुर, निशांत कालिया, दीपाली कालिया, राजेश चोपडा, सोनिया चोपड़ा, डा. जीवन कुमार बस्सन, रंजनी सचदेव, राजीव शर्मा, प्रवीण चौहान, मंजू शर्मा, पवन शर्मा, बिशन लाल, महेन्द्र लाल ठुकराल, इन्दु आर्य, अमन आर्य, संदीप अरोडा, गीतिका अरोडा, मोहन लाल, मनु आर्य, चमन लाल, वीना रानी, रविन्द्र आर्य, अमन आर्य, गौरव आर्य, कनु आर्य, स्नेह लता कालिया, सीमा मेहता, सीमा अनमोल, नवीन मेहता, श्री सुनील ठुकराल, विनोद रत्ती आदि एवं शहीद भगत सिंह कालोनी के निवासी शामिल थे।

वेदवाणी

प्रवाह से बचें

य ई चकार न सो अस्य वेद य ई ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश॥

–ऋ० १।१६४।३२; अथर्व० ९।१०।१०

ऋषिः–**दीर्घतमा॥** देवता–**विश्वेदेवाः॥** छन्दः–**त्रिष्टुप्॥**

विनय–मनुष्य संसार–सागर में डूबता जाता है। मनुष्यों ज्यों–ज्यों 'बहुप्रजा' होता जाता है त्यों–ज्यों यह 'निर्ऋति' में–घोर कष्ट में–पड़ता जाता है। विषय–ग्रस्त हुआ मनुष्य इस संसार में एक कार्य समझता है, अपने बच्चे पैदा करना एवं, प्रकृति में अपने विस्तार को नाना प्रकार बढ़ाता जाता है। इसीलिए वह बार–बार जन्म पाता है, बार–बार जन्म के घोर कष्टों को अनुभव करता है। ऋषि लोगों ने देखा है कि माता की योनि में आये हुए जीव को बार–बार बड़ा भारी मानसिक क्लेश भोगना पड़ता है। उस समय वह जीव केवल झिल्ली से ढका हुआ नहीं होता, किन्तु घोर अज्ञान से भी ढका हुआ होता है, क्योंकि 'बहुप्रजाः' के मार्ग पर जाना अज्ञान से ढके जाने से ही होता है।

मनुष्य 'ढका हुआ' (परिवतीत) होने से ही इस संसार में पागल तथा अन्धे की भाँति रहता है। मनुष्य पागल इसलिए है, क्योंकि वह जो दिन–रात अन्धाधुन्ध काम करता है उसे वह जानता नहीं, यूँ ही करता जाता है। मनुष्य खाना–पीना, चलना–फिरना, प्रेम करना, द्वेष करना आदि जो कुछ करता है उसे वह कुछ भी नहीं जानता कि मैं यह क्या कर रहा हूँ, क्यों कर रहा हूँ, इसका क्या प्रभाव होगा। वह नहीं जानता कि इसका ही फल उसे भोगना होगा। वह नहीं जान पाता कि पहले जन्मों में वह न जाने क्या–क्या कर चुका है। अन्धाधुन्ध वह करता जाता है। इसी प्रकार का उसका सब संसार को देखना है। संसार में वह मनुष्य स्त्री, पशु, पहाड़, नदी, आकाश, सभा, समाज, बड़े–बड़े आनन्ददायक दृश्य और बड़े–बड़े रुलाने वाले दृश्य, इन सबको सोते–जागते देखता जाता है, परन्तु वास्तव में वह इन किन्हीं भी वस्तुओं को नहीं देखता ये सब वस्तुएँ उससे वास्तव में छिपी ही रहती हैं, निःसन्देह छिपी ही रहती हैं। वह देखता हुआ भी किसी भी वस्तु का तत्त्व नहीं देख पाता। इसीलिए वह 'बहुप्रजाः' होने के–प्रकृति में ग्रस्त होने के–मार्ग का अवलम्बन करता है और 'निर्ऋति' में पड़ता जाता है। निर्ऋति (पृथिवी) के इस अन्धकार में धँसते जाने की जगह, मनुष्य 'द्यौः' के प्रकाश की ओर जाने लगे, यदि वह इस संसार में जो कुछ करे उसे जानने लगे और जो कुछ देखे उसे साक्षात् करने लगे तभी उसका कल्याण है।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।